1.

देशव्यापी लाक्ड-डाउन के दौरान छात्र-छात्राओं के लिए पाठ्यक्रमवार तैयार की जा रही पाठ्य सामग्री।

पवन कुमार
सहायक प्राध्यपक (इतिहास)
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर।

यह पाठ्य-सामग्री BRABU के P.G (Prev) इतिहास के पाठ्यक्रम के पत्र संख्या CC-8 : SOCIETY AND ECONOMY IN INDIAN HISTORY से संबंधित है।

Unit. I : SOCIETY

(a) Varna System in Ancient India.

= प्राचीन भारत में वर्ण व्यवस्था =

xxx xxx

विद्यार्थीयों, वर्ण व्यवस्था हमारे प्राचीन भारतीय सामाजिक-आर्थिक जीवनी की एक प्रमुख विशेषता है। इस व्यवस्था ने तथा इतिहास के विकासक्रम के साथ इसके बदले हुए रुप जाति व्यवस्था ने सम्पूर्ण भारतीय जनजीवन को इतनी गहराई से प्रभावित किया है कि इसका अध्ययन किये बगैर हम प्राचीन, मध्यकालीन या आधुनिक भारतीय समाज की मुकम्मल समझदारी का दावा नहीं कर सकते हैं।

वर्ण शब्द संस्कृत की 'वृ' धातु से निकला है जिसका शाब्दिक अर्थ वरण करना अर्थात् चुनना या चयन करना है। इस प्रकार

इससे तात्पर्य वृति अथवा व्यवसाय के चयन से है। वर्ण का एक अन्य अर्थ रंग भी होता है तथा प्राचीन ग्रंथों में इस शब्द का प्रयोग कहीं-कहीं रंग के अर्थ में भी मिलता है।

ऋग्वेद में वर्ण शब्द का पहला प्रयोग रंग के अर्थ में ही मिलता है, जहाँ आर्यों ने स्वयं को श्वेत वर्ण तथा दास-दस्युओं को कृष्ण वर्ण का बताया है। बाद में आगे चलकर यह वर्ण शब्द व्यवसाय-सूचक बन गया तथा लोगों के भिन्न-भिन्न व्यवसाय के आधार पर समाज में वर्णों का विभाजन किया गया। वक़्त बीतने के साथ इसमें कठोरता आई तथा वर्ण निर्धारक पेशा के बजाय जन्म को मान लिया गया और इसप्रकार वर्ण-व्यवस्था विकृत होकर जाति-व्यवस्था के रूप में प्रकट हुआ।

प्राचीन भारतीय साहित्य में वर्ण-व्यवस्था की उत्पति सम्बन्धी विविध उल्लेख मिलता है। सर्वप्रथम ~~ऋग्वेद~~ ऋग्वेद के पुरुषसूक्त में चारों वर्णों को विराट पुरुष के चारो अंगो से उत्पन्न बताया गया है और कहा गया है—

ब्राह्मणोंऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरुतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायतं॥
- ऋग्वेद 10.90.12.

अर्थात विराट पुरुष के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, उदर यानि पेट से वैश्य तथा पैरों से शूद्र की उत्पत्ति हुई। तदनुसार सभी वर्णों को उनका कार्य बाँट दिया गया। विधान किया गया कि ब्राह्मण अध्ययन-अध्यापन तथा शोध का कार्य करेंगे, क्षत्रिय हथियार धारण कर कबीले या समाज या मानव-जाति का रक्षा करेंगे, वैश्य कृषि कार्य और व्यवसाय करेंगे तथा शूद्र ऊपर के तीनों वर्णों की सेवा करेंगे।

पंडित जवाहर लाल नेहरु ने अपनी पुस्तक "द डिस्कवरी ऑफ इंडिया" वर्ण व्यवस्था को श्रम-विभाजन की उत्कृष्ट व्यवस्था मानकर इसकी प्रशंसा की है। लेकिन इस बात पर वे शोक भी व्यक्त किया कि किस प्रकार वर्ण व्यवस्था कालान्तर में जाति व्यवस्था का रुप ले लिया तथा लोगों की जाति उसके कर्म (व्यवसाय) से न निर्धारित हो कर जन्म से निर्धारित होने लगा। अर्थात अब ब्राह्मण होने की योग्यता अध्ययन-अध्यापन में निपुण होने को न मानकर ब्राह्मण के घर जन्म लेने को मान लिया गया। इसे प्रकार किसी शुद्र के घर जन्मे इंसान को अध्ययन-अध्यापन में निपुण होने के बावजूद उसे ब्राह्मण न मानकर शूद्र ही माना जाने लगा और आज हमारे समाज में यही व्यवस्था चलन में है, जिसे हम जाति व्यवस्था के नाम से जानते हैं।

दूसरी तरफ डा॰ भीमराव अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक "एनिहिलिएशन ऑफ कास्ट" (हिन्दी में यह पुस्तक "जाति का विनाश" नाम से उपलब्ध है) में जाति व्यवस्था का उत्स खोजते-खोजते वर्ण-व्यवस्था तक पहुँचे और उन्होंने वर्ण-व्यवस्था की कठोर निन्दा की।

महात्मा गाँधी जातिगत भेदभाव के खिलाफ थे। लेकिन वर्ण-व्यवस्था के पक्षधर थे। लेकिन डा॰ अम्बेडकर ने साफ-साफ कहा कि वर्ण-व्यवस्था को बचाकर जातिगत भेदभाव को मिटाना सम्भव ही नहीं है।

वर्ण-व्यवस्था के सम्बन्ध में यह बहुत थोड़ी जानकारी है, जिसे पर्याप्त न मानकर अध्यापकीय मार्गदर्शन हीं समझें और विषय-वस्तु की मुकम्मल जानकारी-समझदारी के लिए विषय से सम्बंधित पुस्तकों का अध्ययन करें और जहाँ कहीं कोई दिक्कत हो, महाविद्यालय के वेबसाइट से मेरा सम्पर्क सूत्र लेकर सम्पर्क कर सकते हैं।

— धन्यवाद —